ां.	स्थानीय नाम	ऊंचाई मी. में	वैज्ञानिक नाम	मिलने का स्थान	उपयोग
.	सालम पंजा	2800–4000	Dactylorhiza hatagirea	16. चौपाल, रोहड़ू, किन्नौर, कुल्लू, सिराज, चम्बा, पांगी।	16. जड़ें शक्ति प्रदायक, स्फूर्तिदायक, खाने में मिठी तथा शकरा रोग, अतिसार, पेचिश व नपुंसकता में दी जाती है।
.	चिरायता	1600–3000	Swertia chirata	17. शिमला, चम्बा, किन्नौर, राजगढ़, कांगड़ा, रोहड़ू।	17. जड़ें व तने का भाग अनेक प्रकार के ज्वर, अतिसार, उदर पीड़ा, स्तनविकृति, खांसी में उपयोगी है।
.	हरड़	800 मी. तक	Terminalia chebula	18. नाहन, कुनिहार, बिलासपुर, राजगढ़, हमीरपुर, ऊना, नूरपुर, डलहौजी, कांगड़ा।	18. फल पौष्टिक, रोचक व पाचन करने वाला होता है, यह जीर्णज्वा नेत्ररोग, रक्तपित्त, अधिक पसीना आना, मूत्र रोगों में उपयोगी है।
.	ब्रह्मी	1600–2500	Hydrocotyle asiatica	19. नाहन, राजगढ़, सोलन, बिलासपुर, नाचन, हमीरपुर, कुनिहार, ऊना, नूरपुर, कांगड़ा, डलहौजी, चम्बा।	19. जड़े, पत्ते और बीज सभी उपयोगी है, पत्ते कुष्ठ रोगों, फोड़ों व रोगों में उपयोगी हैं। रस स्मरण शक्ति बढ़ाता है।
.	कौड़	1700–3700	Gentiana kurroo	20. किन्नौर, कोटगढ़, रोहड़ू, कुल्लू, लाहौल, चम्बा, पांगी।	20. जड़ें पौष्टिक, बुखार, भूख न होने पर दी जाती है, पेचिश तथा कीड़ों के ईलाज में उपयोगी है।
.	सर्पगन्धा	1000–1800	Rauwolfia serpentina	21. नाहन, पौंटा।	21. जड़ें ब्लड-प्रैशर, हृदय रोग व स्त्री गुप्तांग रोगों में उपयोगी है।
.	नीम	800 मी. तक	Azadirachta indica	22. नाहन, राजगढ़, कुनिहार, बिलासपुर, ऊना, नूरपुर।	22. छाल, पत्ते, फूल व गोंद, सभी दवाई के काम आते हैं। बीजों का चर्मरोगों व चेचक के दागों में उपयोगी है। जड़ें मुहासे दूर करने पत्ते मलेरिया बुखार, नेत्र विकार में उपयोगी है। तेल सन्तति निरो पशुओं के खुर रोग में उपयोगी है।
.	आमला	800–1300	Emblica officinalis	23. नाहन, राजगढ़, कुनिहार, सोलन, बिलासपुर, ऊना, हमीरपुर, कांगड़ा, डलहौजी, चम्बा।	23. फल से त्रिफला बनता है, पेट, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डु रोग, अर्शरोग खुजली, खांसी, गठिया तथा विधिपूर्वक प्रयोग से सफेद बाल का जाते हैं।
.	इस्बगोल	2000–3000	Plantago major	24. शिमला, डलहौजी।	24. हाजमा ठीक होता है तथा पत्ते जख्मों व सूजन पर लगाने के का व बीज पेचिश व पेशाब की बीमारियों में लाभदायक हैं तथा ब होता है।
.	मकोय	1600–2300	Solanum nigrum	25. शिमला, कुल्लू, रोहड़ू, अर्थात् 2300 मी. से नीचे सभी स्थानों पर।	25. फल, बुखार, पेट की बीमारियों व आंख के रोगों में लाभदायक
6.	बहेड़ा	700 मी. के नीचे	Terminalia belerica	26. नाहन, राजगढ़, सोलन, शिमला, कुनिहार, बिलासपुर, सुकेत, नाचन, हमीरपुर, चम्बा, कांगड़ा आदि।	26. बहेड़े से आंखों, हृदय विकार, कर्णस्त्राव, बाल न झड़ने की दवा है। बीजों की गिरी वात नाशक, खांसी-जुकाम में लाभदायक हो गिरी का तेल सुन्दरता बढ़ाने वाला तथा वीर्य-वर्धक होता है।
7.	अमलताश	900–1300	Cassia fistula	27. नाहन, राजगढ़, सोलन, शिमला, कुनिहार, बिलासपुर, सुकेत, नाचन, हमीरपुर, ऊना, नूरपुर, कांगड़ा।	27. फूल, फल, बीज सभी उपयोगी होते हैं। फूलों की सब्जी, गुलुक है।
8.	काला जीरा	2000–4000	Carum carvi	28. लौहाल, स्पिति, किन्नौर, पांगी, कांगड़ा।	28. अमूल्य औषधि है तथा बीज पेट अजीर्णता को दूर करते हैं। मस प्रयोग किया जाता है। बच्चों के पेट दर्द व शूल में लाभदायक, अर्शरोग में लाभदायक, दंत पीड़ा व स्त्रियों के गर्भाशय की पीड़ा क्वाथ में बैठाने व शर्बत पिलाने से आराम मिलता है।
9.	न्योजा (चीलगोज़ा)	3000–3500	Pinus gerardiana	29. किन्नौर।	29. गठिया, जोड़ों की दर्द में लाभदायक है तथा खाने के काम आता
0.	गुच्छी	2000–3500	Morchella esculanta	30. चौपाल, कोटगढ़, किन्नौर, सिराज, कुल्लू, चम्बा, रोहड़ू।	30. कामोद्दीपक (Aphrodiasic) तथा प्रमोलक (Narcotic) है।

स्थानीय नाम	ऊंचाई मी. में	वैज्ञानिक नाम	मिलने का स्थान	उपयोग
ंगली-मिंगली	1500-2500	Dioscorea deltoidea	1. चौपाल, चम्बा, कुल्लू, मण्डी, कांगड़ा, शिमला, राजगढ़।	1. इसके (Rhizomes) कोर्टिसोन (Cortison) निकलती है जो गठिए रोग में लाभदायक है व इससे Alkaloid भी बनता है।
प	3000-4000	Jurinea dolomiaea	2. कुल्लू, सिराज, चौपाल, रोहड़ू, कोटगढ़।	2. जलाने के काम, पेट दर्द, बुखार, शूल, जड़ें पीसकर फुन्सियों पर लगायी जाती हैं।
न्द चीनी	3200-4000	Rheum emodii	3. कुल्लू, चम्बा, पांगी, लाहौल, कांगड़ा, किन्नौर।	3. इसकी जड़ों से कषैला पुष्टक निकलता है।
तीश	2500-4300	Aconitum heterophyllum	4. चम्बा, कुल्लू, लाहौल, किन्नौर, रोहड़ू।	4. इसकी जड़ें काली खांसी, ज्वर, अतिसार, पेचिश रोगों में उपयोगी है।
रा	2700-3300	Angelica glauca	5. सिराज, किन्नौर, कोटगढ़, रोहड़ू।	5. जड़ें उद्दीपक, बदहजमी, पेट दर्द में व मसाले बनाने के काम आती है।
त केसी (मठोसल)	2700-4000	Corydalis govariana	6. शिमला, कुल्लू।	6. इसका रस आंखों के रोग, जड़ बल्य व मूत्रल प्रभाव वाली होती है।
न जोत	2500-3500	Anemone obtusiloba	7. चौपाल, रोहड़ू, शिमला, कुल्लू, चम्बा, डलहौजी।	7. बीज खाने से उल्टी होती है, तेल निकलता है तथा गठिए में उपयोगी है।
रकबाला	2400-3000	Valeriana wallichii	8. पांगी चम्बा, कुल्लू, सिराज, मण्डी, किन्नौर।	8. जड़ें उद्दीपक, तेल स्नायु रोगों में उपयोगी हिस्टीरिया, बिच्छुदंश आदि में लाभदायक है।
ड़ू	3000-4000	Picrorhiza kurroa	9. चम्बा, पांगी, डलहौजी, लाहौल, किन्नौर, कुल्लू।	9. जड़े ज्वर, सूजन, कास रोग, पेट रोग में उपयोगी है।
ठ	2500-4000	Saussurea lappa	10. पांगी, डलहौजी, लौहाल, स्पिति।	10. दमा, खांसी, गठिया, हैजा आदि रोगों में लाभदायक व इसकी जड़ें उद्दीपक होती हैं।
ीश	2500-4300	Aconitum chesmanthum	11. चम्बा, पांगी, लाहौल, किन्नौर, रोहड़ू, चौपाल, कोटगढ़।	11. इसकी जड़ें मधुमेह, बहुमूत्र, स्वप्नदोष में गुणकारी तथा सर्दी-बुखार, अधिक प्यास, उल्टी, खांसी तथा स्वास रोगों में लाभदायक होती हैं।
लिया	3000-5000	Aconitum violaceum	12. पांगी, लाहौल, चम्बा, डलहौजी, कांगड़ा।	12. जड़ें पौष्टिक, ज्वर, सूजन, खांसी, टॉनसिल, तपेदिक नपुंसकता में उपयोगी हैं।
रासानी अजवायन	2600-4500	Hyoscyamus niger	13. लाहौल, चम्बा, कुल्लू, पांगी, किन्नौर, कोटगढ़।	13. पत्तों में हायोसाईमिन क्षारम निकलता है जोकि अनेक दवाईयों में काम आता है, बीज अधरंग स्नायु रोगी, दमा, खांसी तथा गर्भाशय वेदना आदि के इलाज में उपयोगी है।
कक्कड़ी	2700-4500	Podophyllum hexandrum	14. शिमला, कोटगढ़, किन्नौर, कुल्लू, चम्बा।	14. जड़ें उद्दीपक तथा कैंसर के रोगों में उपयोगी हैं।
लम मिश्री	2000-3500	Polygonatum verticillatum	15. चम्बा, कुल्लू, रोहड़ू, शिमला, कोटगढ़, किन्नौर।	15. जड़ें मूत्रल व बलवर्धक है और विशेषत: स्त्रियों की कमजोरी में लाभदायक है।